بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-10.06.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों पर चर्चा के अतंर्गत यमामा के युद्ध में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमअीन के महान बलिदानों का अत्यंत ईमान वर्धन वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 10 जून 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مَالِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के वर्णन में यमामा के युद्ध के विषय में बयान चल रहा था। इसके बारे में हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने अबादा बिन बशर को कहते हुए सुना कि ऐ अब् सईद, जब हम बज़ाख़ा के अभियान से निपट लिए तो उस रात मैंने सपने में देखा कि जैसे आसमान को खोला गया है फिर मुझ पर बन्द कर दिया गया है, इसका अभिप्रायः शहादत है। अबू सईद कहते हैं- मैंने कहा, इन्शाअल्लाह जो भी होगा अच्छा ही होगा। हज़रत अबू सईद कहते हैं- मैंने अबादा बिन बशर की शहादत के बाद उन्हें देखा कि आपके चेहरे पर अत्यधिक तलवारों के घाव के निशान थे और मैंने आपको आपके शरीर पर मौजूद एक चिन्ह से पहचाना।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- फिर हज़रत उम्मे अम्मारा का वर्णन आता है। उम्मे अम्मारा इस्लाम के इतिहास की अति दलेर महिलाओं में से एक थीं, सहाबियः थीं। ओहद की लड़ाई में शरीक हुईं तथा अत्यधिक वीरता के साथ लड़ीं। उम्मे अम्मारा यमामा के युद्ध के बारे में बयान करती हैं कि उनके बेटे अब्दुल्लाह ने मुसैलमा कज़्ज़ाब का वध किया। हज़रत उम्मे अम्मारा उस दिन स्वयं भी यमामा के युद्ध में शामिल थीं तथा उसमें उनका एक बाजू कट गया था। हज़रत उम्मे अम्मारा के इस लड़ाई में शामिल होने का

कारण यह बयान हुआ है कि उनके बेटे हबीब बिन ज़ैद जो अम्मान में थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन की सूचना सुनकर अम्मान से मदीना आ रहे थे। मुसैलमा ने उन्हें पकड़ लिया तथा कहा

कि क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रस्ल हूँ। हबीब ने जवाब दिया कि मैं सुनता नहीं। मुसैलमा ने फिर पूछा- क्या तुम गवाही देते हो कि मुहम्मद (स.) अल्लाह के रसूल हैं। हबोब रज़ी. ने कहा- हाँ। मुसैलमा ने उनके बारे में आदेश दिया तो उनके टुकड़े टुकड़े कर दिए गए। मुसैलमा जब भी उनसे कहता कि क्या तुम गवाही देते हो कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो वे कहते कि मैं सुन नहीं सकता और जब वह कहता कि क्या तुम गवाही देते हो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं तो आप कहते- हाँ। यहाँ तक कि उसने आपका एक एक अंग काट डाला। जब हज़रत उम्मे अम्मारा को बेटे की शहादत की सूचना मिली तो उन्होंने क़सम खाई कि वे स्वयं मुसैलमा कज़्ज़ाब का सामना करेंगी और अथवा उसको मार डालेंगी अथवा स्वयं ख़ुदा की राह में शहीद हो जाएँगी। इस युद्ध में उनका एक बेटा अब्दुल्लाह भी शरीक था। वे बयान करती हैं कि जब हम यमामा पहुंचे तो भीषण युद्ध हुआ, मैंने ख़ुदा के दुश्मन मुसैलमा को खोजने का निश्चय किया कि उसे पाऊँ और देखूँ। मैंने अल्लाह से एहद किया था कि यदि मैंने उसे देख लिया तो मैं उसको छोडूंगी नहीं, उसको मारूंगी अथवा स्वयं मर जाऊँगी, यहाँ तक कि मैंने अल्लाह के उस दुश्मन को देखा, मैंने उस पर हमला कर दिया, एक व्यक्ति मेरे सामने आया उसने मेरे हाथ पर वार किया तथा उसे काट दिया, अल्लाह की क़सम मैं डगमगाई नहीं ताकि मैं उस दुष्ट तक पहुंच जाऊँ और वह धरती पर पड़ा था और मैंने अपने बेटे अब्दुल्लाह को वहाँ पाया, उसने उसे मार दिया था। एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत उम्मे अम्मारा बयान करती हैं कि मेरा बेटा अपने कपड़े से अपनी तलवार को साफ़ कर रहा था। मैंने पूछा- क्या तुमने मुसैलमा का वध किया है? उसने कहा- हाँ, ऐ मेरी माता। मैंने अल्लाह के सामने आभार की भावना से सजदा किया। हज़रत उम्मे अम्मारा कहती हैं कि अल्लाह ने दुश्मनों की जड़ काट दी। जब युद्ध समाप्त हो गया और मैं अपने घर वापस लाटी तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद एक अरब के वैद्य को मेरे पास लेकर आए, उसने उबलते हुए तेल के साथ मेरा उपचार किया। अल्लाह की क़सम यह उपचार मेरे लिए हाथ कटने से अधिक कष्टदायक था। हज़रत ख़ालिद मेरा अत्यधिक ध्यान रखते थे तथा हमारे साथ सद्व्यवहार करते थे, हमारा हक़ सदैव याद रखते थे और हमारे बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीय्यत का ध्यान रखते थे।

यमामा के युद्ध में मुसलमानों के ज़ख़मियों की संख्या अत्यधिक थी तथा घाव के कारण अन्सार तथा मुहाजिरों में से बहुत थोड़ी संख्या हज़रत ख़ालिद के साथ नमाज़ अदा करती थी। एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत उम्मे अम्मारा यमामा की लड़ाई में ज़ख़मी हुईं तलवार तथा भाले के गयारह घाव उनको लगे इसके अतिरिक्त उनका एक हाथ कट गया। हज़रत अबू बकर उनका हाल पूछने के लिए आते रहे। कअब बिन अजरह ने उस दिन घोर युद्ध किया। उस दिन लागों को भारी हानि उठानी पड़ी और लोग पराजित होकर भागते हुए सेना के अन्तिम भाग को भी पार कर गए। कअब ने पुकारा- ऐ अन्सार, ऐ अन्सार, अल्लाह और रसूल की सहायता के लिए आओ तथा यह कहते हुए वे मुहकम बिन तुफ़ैल तक पहुंच गए। मुहकम ने उन पर वार किया तथा उनका बायाँ हाथ काट दिया। अल्लाह की क़सम कअब इसके बावजूद लड़खड़ाए नहीं

और दाएँ हाथ से वार करते रहे जबकि बाएँ हाथ से ख़ून बह रहा था। फिर अबू अक़ील के बारे में आता है कि अबू अक़ील अन्सार के दोस्त थे, आप यमामा के युद्ध वाले दिन सबसे पहले लड़ने के लिए निकले। आपको एक तीर लगा जो कंधे को चीरता हुआ दिल तक पहुंच गया। आपने उस तीर को खींच कर बाहर निकाला। आप उस घाव के कारण दुर्बल हो गए। आपने मअन बिन अदी को कहते हुए सुना कि ऐ अन्सार, दुश्मन पर हमले के लिए लौटो। उमरू कहते हैं कि अबू अक़ील अपने लोगों की ओर जाने के लिए उठे, मां ने पूछा अबू अक़ील, आपका क्या इरादा है, आप में युद्ध के लिए जाने का सामर्थ्य नहीं है, बड़े दुर्बल हो गए हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि पुकारने वाले ने मेरा नाम पुकार कर आवाज़ लगाई है। मैंने कहा, उन्होंने तो केवल अन्सार का नाम लिया है तथा उनका अभिप्रायः ज़ख़मी लोग नहीं था। अबू अक़ील ने जवाब दिया कि मैं अन्सार में से हूँ और मैं अवश्य जवाब दूँगा, चाहे अन्य लोग कमज़ोरी दिखाएँ। इब्ने उमर कहते हैं कि अबू अक़ील साहस करके उठे, अपने दाहिने हाथ में नंगी तलवार ली, फिर पुकारने लगे- ऐ अन्सार, हुनैन के दिन की भांति पलट कर हमला करो। वे सब एकत्र हो गए तथा दुश्मन के सामने मुसलमानों की ढाल बन गए, यहाँ तक उन्होंने दुश्मन को बाग़ में धकेल दिया। वे आपस में मिल जुल गए अर्थात अन्दर जाकर फिर घमसान की लड़ाई हुई तथा तलवारें एक दूसरे पर पड़ने लगीं। मैंने अबू अक़ील को देखा, आपका ज़ख़मी हाथ कंधे से कट गया तथा आपका वह बाज़ू ज़मीन पर गिर पड़ा, आपको चौदह घाव लगे, इन सब घावों के कारण आप शहीद हो गए। इब्ने उमर कहते हैं कि मैं अबू अक़ील के पास पहुंचा तो वे ज़मीन पर गिरे हुए अन्तिम सांस ले रहे थे। मैंने कहा, ऐ अबू अक़ील, तो उन्होंने लड़खड़ाती हुई ज़बान से कहा, लब्बैक। फिर कहा, किसकी हार हुई। मैंने उच्च स्वर में कहा- ख़ुश-ख़बरी हो, अल्लाह का दुश्मन मुसैलमा मारा गया। उन्होंने अलहमदुलिल्लाह कहते हुए अपनी उंगली आसमान की ओर उठाई और जान दे दी। इब्ने उमर कहते हैं कि मैंने अपने वालिद हज़रत उमर को उनकी यह पूरी घटना सुनाई तो उन्होंने फ़रमाया- अल्लाह उन पर दया करे, वे सदैव शहादत की अभिलाषा रखते थे तथा मेरी जानकारी के अनुसार वे रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुछ गिने चुने सहाबियों में से थे तथा उनमें से पुराने इस्लाम लाने वालों में से थे।

यमामा के युद्ध क पश्चात एक दिन मजाअः बिन मरारा ने हज़रत अबू बकर रज़ी. से निवेदन किया कि ऐ ख़लीफ़ ए रसूल, मैंने यमामा के युद्ध में शामिल होने वाले सहाबियों से बढ़ कर किसी को तलवारों के वारों के सामने जमे रहने वाला नहीं देखा, तथा न ही उन से अधिक प्रहार करने वाला देखा है। मजाअः हज़रत अबू बकर रज़ी. को मअन बिन अदी तथा अन्सार की दृढ़ संकल्पता तथा वीरता से लड़ते हुए उनकी शहादत की बातें बता रहा था। हज़रत अबू बकर रज़ी. यह सुन कर रो पड़े, यहाँ तक कि आपकी दाढ़ो आंसुओं से भीग गई।

महमूद बिन लबीद से रिवायत है कि जब हज़रत ख़ालिद ने यमामा वालों का वध किया तो मुसलमान भी उस युद्ध में भारी संख्या में शहीद हुए, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह के अधिकांश सहाबी भी शहीद हो गए और मुसलमानों में से जो जीवित रह गए थे उनमें से अधिकांश ज़ख़मी थे। जब हज़रत ख़ालिद को मुसैलमा की हत्या के विषय में सूचित किया गया तो वे मजाअः को बेड़ियों में जकड़ कर साथ लाए ताकि मुसैलमा की पहचान कराएँ। वह शवों में उसे देखता रहा, किन्तु वहाँ उस मुसैलमा न मिला। फिर वह बाग़ मे दाख़िल

हुआ तो एक छोटे क़द वाला, पीले रंग तथा चपटी नाक वाले आदमी का शव दिखाई दिया तो मजाअः ने कहा- यह मुसैलमा है जिससे तुम मुक्ति पा चुके हो।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के एक सपने का वर्णन है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने जब हज़रत ख़ालिद को यमामा की ओर भेजा तो आपने सपने में देखा था कि आपके पास हजर नामक बस्ती है, उसकी खजूरों में से कुछ खजूरें लाई गईं, आपने उनमें से एक खजूर खाई, उसको आपने गुठली पाया, अर्थात वह खजूर नहीं थी बल्कि गुठली थी। कुछ समय बाद आपने उसको चबाया फिर उसको फेंक दिया। आपने उस सपने का स्वप्न-फल यह बताया कि ख़ालिद को यमामा के लोगों की ओर से भारी मुक़ाबले का सामना करना पड़ेगा तथा अल्लाह अवश्य उसके हाथ पर विजय प्रदान करेगा। हज़रत अबू बकर यमामा की ओर से आने वाली ख़बरों की बड़ी व्याकुलता से प्रतीक्षा करते थे और जैसे ही ख़ालिद की ओर से कोई सूचना देने वाला आता तो आप उससे सूचनाएँ प्राप्त करते।

मृतकों की संख्या के विषय में कहा जाता है कि इस युद्ध में मारे जाने वाले मुर्तदों की संख्या लगभग दस हज़ार थी और एक रिवायत के अनुसार इक्कीस हज़ार भी बयान हुई है, जबकि लगभग पाँच सौ अथवा छः सौ मुसलमान शहीद हुए। कुछ रिवायतों में यमामा के युद्ध में शहीद होने वाले मुसलमानों की संख्या सात सौ, बारह सौ, तेरह सौ भी बयान हुई है। एक रिवायत के अनुसार उस लड़ाई में शहीद होने वालों में सात सा से अधिक हाफ़िज़े क़ुर्आन थे। उन शहीदों में उच्च स्तरीय सहाबी तथा क़ुर्आन के हाफ़िज़ भी शामिल थे जिनका स्तर तथा प्रतिष्ठा मुसलमानों में अत्यधिक बुलन्द था, उनकी शहादत एक बड़ी दुःखद घटना थी परन्तु उन क़ुर्आन के हाफ़िज़ों की शहादत ही बाद में क़ुर्आन को जमा करने का कारण बनी। उन शहीदों में से कुछ प्रसिद्ध सहाबियों के नाम ये थ। हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब, हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन रबीअः, हज़रत सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ा, हज़रत ख़ालिद बिन उसैद, हज़रत हकम बिन सईद, हज़रत तुफ़ैल बिन उमरू दोसी, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम के भाई हज़रत सायब बिन अवाम, हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस बिन क़ैस, हज़रत अबादा बिन हारिस, हज़रत अबादा बिन बशर, हज़रत मालिक बिन औस, हज़रत सुराक़ा बिन कअब, हज़रत मअन बिन अदी प्रवक्ता रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत साबित बिन क़ैस बिन शमास, हज़रत अबू दजाना, रईसुल मुनाफ़िक़ अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल के सच्चे मोमिन बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह और हज़रत यज़ीद बिन साबित ख़ज़रजी।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार यमामा का युद्ध रबीउल अव्वल बारह हिजरी में हुआ जबकि कुछ कथनों के अनुसार यह गयारह हिजरी के अन्त में हुआ। इन दोनों कथनों का समायाजन इस प्रकार हो सकता है कि इस युद्ध का आरम्भ गयारह हिजरी में हुआ हो तथा इसका अन्त बारह हिजरी में हुआ हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ
اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131